PVG's

Muktangan English School & Jr. College, Pune - 9

Formative Written Test II (2024-25)

Standard - VIII

Subject - Hindi (Composite) | **Marks - 10**

Date - 27.01.2025 | **Time : 9.30 am to 10.45 am**

सूचना : शुद्ध भाषा एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है ।

विभाग १ - गद्य

कृति १ अ) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

बहुत पहले की बात है । एक गाँव में फूलों की क्यारियाँ चारों तरफ सुगंध फैला रही थीं । फूलों से मधु इकट्ठा करने के लिए मधुमक्खियाँ फूलों पर मँड़रा रही थीं । एक मधुमक्खी गुलाब के फूल पर बैठी उसका रस चूस रही थी । तभी एक बर्र उड़ती हुई वहाँ आ पहुँची । बर्र को अपने रूप - रंग पर बड़ा घमंड था । वह मधुमक्खी को देखकर जल - भुन गई । बर्र ने मधुमक्खी से कहा, ''हम दोनों में बहुत समानता है । हम दोनों के पंख हैं हम दोनों उड़ सकती हैं । हम दोनों फूलों का रस चूसती हैं । हम दोनों डंक भी मारती हैं । फिर क्या कारण है कि मनुष्य तुमको पालते और मुझे दूर भगाते हैं । वैसे मैं तुमसे अधिक सुंदर भी हूँ ।'' मुझे बताओ कि मनुष्य मेरे साथ ऐसा क्यों करते हैं ?

मधुमक्खी ने उत्तर दिया, ''यह सच है बहन! तुम रंग - बिरंगी हो, उड़ती भी हो परंतु फिर भी तुम्हारा आदर नहीं होता, इसका कारण यह है कि कोई भी प्राणी सुंदरता के कारण नहीं, अपने अच्छे गुणों के कारण आदर पाता है । मनुष्य उन प्राणियों का ही आदर करते हैं जो परोपकारी होते हैं, दूसरों को दुख नहीं पहुँचाते हैं । तुम सुंदर हो, परंतु मनुष्य को केवल कष्ट देती हो । तुम उन्हें डंक मारती हो । तुम्हारे डंक मारने से सूजन आ जाती है । बहुत दर्द होता है । मैं उन्हें मीठा शहद देती हूँ । मैं उनके काम आती हूँ । यही कारण है कि वे मुझे पालते हैं और तुम्हें दूर भगाते हैं ।''

१) आकृति पूर्ण कीजिए। **(1)**

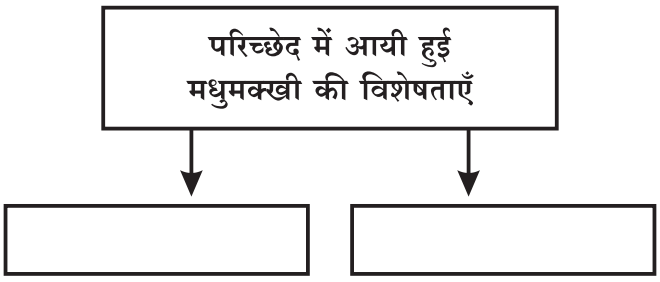

२) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए । **(1)**

१) सुगंध **X** २) समानता **X**

३) **निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए** **(1)**

१) बहन – २) फूल –

४) **'परोपकार' इस लघुकथा से हमें क्या सीख मिलती है ?** **(2)**

विभाग २ - पद्य

कृति २) निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

शाल और सागौन वनों को, पार किया शबरी ने,
सुन रक्खा था नाम कभी, पंपसार का शबरी ने।

पंपासर में बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के हैं आश्रम
ज्ञान-व्यान, तप-आराधन के तीर्थरूप हैं आश्रम।

प्रात:काल हुआ ही था, सब स्नान-ध्यान में रत थे,
यज्ञ आदि के लिए बटुक जन लकड़ी बीन रहे थे।

कोई क्यारी छाँट रहा था, सींच रहा जल कोई,
दुही जा चुकी थीं गायें सब, रँभा रही थीं कोई।

गीले आँगन में हरिणों के, खुर उभरे पड़ते थे,
बैठ आम की डाली पर, तोते चीखे पड़ते थे।

जलकलशी ले ऋषिकन्याएँ, पोखर आतीं-जातीं,
भीगी, एकवसन में वे सब, धुले चरण घर चलतीं।।

१) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **(१)**

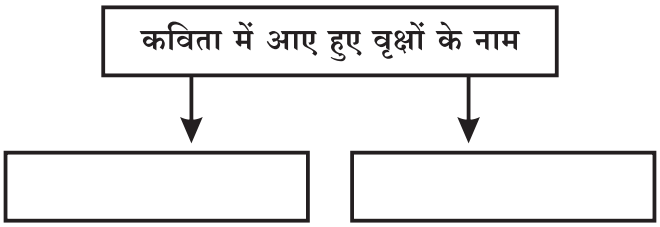

२) **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए।** **(१)**

i) जल = **ii)** वन =

३) **निम्नलिखित शब्दों के वचन पहचानकर लिखिए।** **(१)**

i) डाली – **ii)** गायें –

४) प्रात:काल हुआ ही था, सब स्नान-ध्यान में रत थे,
यज्ञ आदि के लिए बटुक जन लकड़ी बीन रहे थे।
कोई क्यारी छाँट रहा था, सींच रहा जल कोई,
दुही जा चुकी थी गायें सब, रँभा रही थी कोई।

कविता की इन पंक्तियों का सरल अर्थ अपने शब्दों में ६-८ पंक्तियों में लिखिए। **(२)**